अपना मालवा (खाऊ उजाड़ू सभ्यता में) (CH- 3) Detailed Summary || Class 12 Hindi अंतरा

पाठ का सार

इस पाठ में लेखक ने मालवा प्रदेश के मौसम, ऋतुओं, नदियों, जीवन और संस्कृति का बहुत ही सजीव वर्णन किया है। अतीत में मालवा कितना खुशहाल था, जहां हर कदम पर पानी की उपलब्धता थी। आज उस मालवा प्रदेश का जल विलुप्त होने के कगार पर है, जिसके कारण पुरानी संस्कृति और नई खाऊ – उजाड़ू संस्कृति ने लेखक के मन पर विपरीत प्रभाव डाला है, उसकी जीवन प्रत्याशा को प्रकट करने का प्रयास किया है।

मालवा में जब अत्यधिक बारिश होती है तो इसका असर जनजीवन पर पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी बारिश ही ग्रामीणों के लिए परेशानी खड़ी करती है, उनके आवागमन के साधन ठप हो जाते हैं और लोगों को आने-जाने में परेशानी होती है।

बारिश से गेहूं और चने की फसल तो अच्छी होती है, लेकिन सोयाबीन की फसल बर्बाद हो जाती है। अत्यधिक वर्षा के कारण नदियों में बाढ़ आ जाती है और लोगों के घरों, दुकानों आदि में पानी घुस जाता है। लेखक के अनुसार मालवा में पानी पहले की तरह नहीं गिरता क्योंकि उद्योगों से निकलने वाली गैसों के कारण वातावरण गर्म हो रहा है। मालवा में आधुनिक प्रगति की आड़ में पर्यावरण का लगातार दोहन हो रहा है, जिससे प्राकृतिक संतुलन लगातार बिगड़ रहा है। वायु प्रदूषण फैल रहा है।

पर्यावरण असंतुलित हो गया है। इससे बारिश का मौसम भी प्रभावित हुआ और मालवा में औसत बारिश कम हो गई।
आज के इंजीनियर पश्चिमी शिक्षा को उच्च मानते हैं।

जबकि यह असमंजस की स्थिति है। पश्चिमी प्रगति से पहले भारत की संस्कृति में जल प्रबंधन, नगर नियोजन आदि के क्षेत्र में व्यापक विस्तार हुआ है, इसका प्रमाण हड़प्पा सभ्यता से भी मिलता है।

उनका मानना है कि ज्ञान पश्चिम के के रिनेसां (पुनर्जागरण) के बाद आया। पश्चिम का पुनर्जागरण बहुत पुराना नहीं है। जबकि यहां हड़प्पा सभ्यता और मोहनजोदड़ो की खुदाई से स्पष्ट है कि भारत की प्राचीन सभ्यता में जल प्रबंधन की विस्तृत योजना बनाई गई थी।

आचार्य चाणक्य के दिशा-निर्देशों के तहत, आम जनता के सहज और उचित प्रशासन का लाभ देने के लिए कई ऐसी योजनाएँ बनाई गईं, जो पश्चिमी संस्कृति या पुनर्जागरण के बाद उत्पन्न हुई विकासशील संरचना को भी पीछे छोड़ देती हैं।

लेकिन भारतीय संस्कृति, सभ्यता और इतिहास की अज्ञानता के कारण वे यह नहीं जानते कि विक्रमादित्य भोज और मूंज ने जल प्रबंधन को समझ लिया था जिसमें वे पुनर्जागरण के आगमन से पहले खुद को विशेषज्ञ मानते थे। पठार पर पानी रोकने के लिए उन्होंने तालाब-बावड़िया का निर्माण करवाया और बारिश के पानी को रोककर धरती के गर्भ में जल को जीवित रखा।
हमारे इंजीनियरों ने तालाबों और बावड़ियों को बेकार समझकर उन्हें कीचड़ से भरने दिया। मालवा में नवरात्र की पहली सुबह घाट स्थापना होती है। लोग आंगन को गाय के गोबर से लिपटे, मानाजी के ओटले को रंगोली से सजाने और उत्सव को विस्तृत सजावट के साथ मनाने की तैयारी कर रहे हैं।
लेखक हैरान है कि इस समय भी बादल गरज रहे हैं और बारिश की पूरी संभावना है।

https://www.evidyarthi.in/

ओंकारेश्वर में नर्मदा नदी पर बांध बनाया जा रहा था, जो सीमेंट कंक्रीट से बने विशालकाय राक्षस जैसा दिखता है। बांध से नदी का वेग बाधित हो गया था, जिससे नदी तिनफिन करती बह रही है। मानो बांध बनने से चिढ़ हो रही हो। बांध के निर्माण में लगी मशीनें और ट्रक गुर्राते नजर आ रहे हैं।

ज्योतिर्लिंग का तीर्थ भी पहले जैसा नहीं लगता।

वर्तमान युग औद्योगिक विकास का युग है।

नदियां गंदे नालों में तब्दील हो रही हैं। लोग नदियों में कचरा फेंकते हैं। कारखानों, उद्योगों के रसायन नदियों में बहाए जाते हैं। हिंदू सभ्यता से जुड़ी पूजा सामग्रियों को पानी में प्रवाहित किया जाता है।

इन्हीं सब कारणों से नदियां सड़े-गले नालों में तब्दील हो रही हैं।

शिप्रा, चंबल, नर्मदा, चोराल, ये सभी नदियां विकास की सभ्यता से गंदे पानी के नालों में तब्दील हो चुकी हैं। जिसे हम विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते हैं। यह वास्तव में उजाड़ की सभ्यता है। आधुनिक औद्योगिक विकास ने हमें प्रकृति से अलग कर दिया है। हमारी नदियां सूख गई हैं, पर्यावरण प्रदूषित हो गया है। विकास की

औद्योगिक सभ्यता वास्तव में उजाड़ की अपसभ्यता है।

यह खाऊ – उजाड़ू सभ्यता यूरोप और अमेरिका की उपज है।

वह अपनी इस पद्धति को बदलना भी नहीं चाहते।

वातावरण को गर्म करने वाली अधिकांश गैस यूरोप और अमेरिका में उत्सर्जित होती है, फिर भी वे जीवन के इस तरीके से समझौता नहीं करना चाहते हैं। इन गैसों से बढ़ते तापमान के कारण समुद्र का पानी गर्म होता जा रहा है। पृथ्वी के ध्रुवों पर बर्फ पिघल रही है, ऋतुओं का चक्र बिगड़ रहा है।

लद्दाख में बर्फ की जगह पानी गिरा, बाढ़ में बाड़मेर के गांव डूबे गए।

यही कारण है कि मालवा में अब डग – डग रोटी, पग – पग दिप नहीं मिलता है।

लेखक के अनुसार अमेरिका और यूरोप की नकल करते हुए हम जीवन, संस्कृति और सभ्यता का ऐसा तरीका अपना रहे हैं, जो पर्यावरण के लिए हानिकारक है।

https://www.evidyarthi.in/